NEXT IAS

दैनिक संपादकीय विश्लेषण

विषय

वन्यजीव जनसँख्या में गिरावट

www.nextias.com

वन्यजीव जनसँख्या में गिरावट

समाचार में

- वर्ल्ड वाइड फंड फॉर नेचर (WWF) की लिविंग प्लैनेट रिपोर्ट 2024 से पता चलता है कि 1970 से 2020 तक पिछले 50 वर्षों में निगरानी की गई वन्यजीव जनसँख्या के औसत आकार में 73% की भारी कमी आई है।

मुख्य निष्कर्ष

- **वन्यजीव जनसँख्या में गिरावट:** 1970 और 2020 के बीच निगरानी की गई वन्यजीव जनसँख्या में औसतन 73% की गिरावट दर्ज हुई है, जिसमें मीठे पानी की प्रजातियों में सबसे अधिक 85% की गिरावट दर्ज हुई है, उसके बाद स्थलीय (69%) और समुद्री (56%) की गिरावट आई है।
- **मुख्य खतरे:** आवास की हानि, मुख्य रूप से खाद्य प्रणालियों के कारण, उसके बाद अतिदोहन, आक्रामक प्रजातियाँ, बीमारी और प्रदूषण (विशेष रूप से एशिया और प्रशांत को प्रभावित करने वाले) हैं।
- **टिपिंग पॉइंट और पारिस्थितिकी तंत्र जोखिम:** वन्यजीवों की गिरावट पारिस्थितिकी तंत्र के टिपिंग पॉइंट के जोखिम का संकेत देती है, जिसमें महत्वपूर्ण सीमाएँ संभावित रूप से अपरिवर्तनीय क्षति की ओर ले जाती हैं - उदाहरण के लिए, अमेज़ॅन डाइबैक और कोरल रीफ की हानि वैश्विक खाद्य सुरक्षा और आजीविका को प्रभावित करता है
- **भारत की वन्यजीव स्थिति:** भारत की गिद्ध जनसंख्या गंभीर रूप से खतरे में है, 1992 और 2002 के बीच तीन प्रजातियों में महत्वपूर्ण गिरावट आई है।
  - संरक्षण प्रयासों ने कुछ प्रजातियों को ठीक होने में सहायता की है, जिनमें बाघ (2022 में 3,682) और हिम तेंदुए (हाल के आकलन में 718) शामिल हैं।
- **चेन्नई में आर्द्रभूमि का हानि:** शहरी विस्तार के कारण चेन्नई की आर्द्रभूमि 85% तक सिकुड़ गई है, जिससे बाढ़ और सूखे की आशंकाएँ बढ़ गई हैं।
  - तमिलनाडु आर्द्रभूमि मिशन जैसी पहलों का ध्यान आर्द्रभूमि को पुनर्स्थापित करने पर है ताकि लचीलापन बेहतर हो सके।

प्रभाव

- **पारिस्थितिकी तंत्र असंतुलन:** वन्यजीव पारिस्थितिकी संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। प्रजातियों के कम होने पर शिकारी-शिकार संबंध, परागण और पोषक चक्र बाधित होते हैं, जिससे पारिस्थितिकी तंत्र अस्थिर तथा विध्वंश जाता है।
- **जैव विविधता की हानि:** वन्यजीव जनसँख्या में गिरावट से आनुवंशिक विविधता कम हो जाती है, जिससे पारिस्थितिकी तंत्र पर्यावरणीय परिवर्तनों, बीमारियों और प्राकृतिक आपदाओं के प्रति कम लचीला हो जाता है। यह हानि पारिस्थितिकी तंत्र के स्वास्थ्य और अनुकूलन क्षमता को कमज़ोर करता है।

- **खाद्य सुरक्षा के लिए खतरा:** वन्यजीव परागण, कीट नियंत्रण और मृदा स्वास्थ्य के माध्यम से खाद्य प्रणालियों का समर्थन करते हैं। मधुमक्खियों और अन्य परागणकों जैसी प्रजातियों में गिरावट का सीधा असर फसल की उपज और वैश्विक खाद्य आपूर्ति पर पड़ता है।
- **मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव:** स्वस्थ पारिस्थितिकी तंत्र कीटों की जनसँख्या को नियंत्रित करके और प्राकृतिक अवरोध प्रदान करके बीमारियों को नियंत्रित करते हैं। जैव विविधता में गिरावट के साथ, जूनोटिक बीमारियों (जैसे COVID-19) का जोखिम बढ़ जाता है, जो मानव स्वास्थ्य को प्रभावित करता है।
- **आर्थिक परिणाम:** कृषि, मछली पकड़ने और पर्यटन सहित विभिन्न उद्योग स्वस्थ पारिस्थितिकी तंत्र पर निर्भर हैं। वन्यजीवों की गिरावट इन क्षेत्रों को हानि पहुँचा सकती है, जिससे रोजगार छूट सकते हैं और आर्थिक अस्थिरता हो सकती है, विशेषकर उन समुदायों में जो प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर हैं।
- **सांस्कृतिक और सामाजिक प्रभाव:** वन्यजीव विश्व भर के समुदायों के लिए सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और मनोरंजक मूल्य रखते हैं। प्रतिष्ठित प्रजातियों के नष्ट होने से सांस्कृतिक पहचान कम हो सकती है और प्रकृति-आधारित मनोरंजन तथा पर्यटन के अवसर कम हो सकते हैं।

जैव विविधता के संरक्षण से संबंधित चुनौतियाँ

- अंतर्राष्ट्रीय प्रतिबद्धताओं (वैश्विक जैव विविधता रूपरेखा, पेरिस समझौता, संयुक्त राष्ट्र SDGs) के बावजूद, वर्तमान राष्ट्रीय कार्य 2030 के लक्ष्यों के लिए अपर्याप्त हैं, जिससे खतरनाक टिपिंग पॉइंट का जोखिम है।
- **आवास की हानि और विखंडन:** कृषि, शहरीकरण और बुनियादी ढांचे के विकास का विस्तार आवासों के विनाश और विखंडन की ओर ले जाता है, पारिस्थितिकी तंत्र को बाधित करता है और प्रजातियों को खतरे में डालता है।
- **जलवायु परिवर्तन:** बढ़ते तापमान, परिवर्तित वर्षा पैटर्न और चरम मौसम की घटनाएँ पारिस्थितिकी तंत्र को प्रभावित करती हैं, जिससे प्रजातियाँ अपने प्राकृतिक आवासों से बाहर निकल जाती हैं और भोजन एवं पानी की उपलब्धता में परिवर्तन होता है।
  - जंगल की आग लंबे समय तक चलती है और अधिक तीव्र होती जा रही है, साथ ही अत्यधिक आग की घटनाएँ अधिक बार हो रही हैं - यहाँ तक कि आर्कटिक सर्कल तक भी पहुँच रही हैं।
- **संसाधनों का अत्यधिक दोहन:** अस्थिर शिकार, मछली पकड़ना, लकड़ी काटना और कटाई से प्रजातियों की जनसँख्या में गिरावट और पारिस्थितिकी तंत्र का क्षरण होता है, जिससे जैव विविधता को खतरा होता है।
- **प्रदूषण:** औद्योगिक, कृषि और प्लास्टिक प्रदूषण वन्यजीवों एवं प्राकृतिक आवासों को हानि पहुँचाते हैं। कीटनाशकों और भारी धातुओं जैसे प्रदूषक प्रजातियों में प्रजनन तथा प्रतिरक्षा प्रणाली को बाधित कर सकते हैं।
- **आक्रामक प्रजातियाँ:** पारिस्थितिकी तंत्र में लाई गई गैर-देशी प्रजातियाँ देशी प्रजातियों से प्रतिस्पर्धा कर सकती हैं, उनका शिकार कर सकती हैं या उनमें बीमारी फैला सकती हैं, जिससे प्रायः स्वदेशी जनसँख्या में गिरावट या विलुप्ति होती है।

- **निधि और संसाधनों की कमी:** संरक्षण प्रयासों में प्रायः अपर्याप्त निधि होती है, जिससे आवासों की रक्षा करने, प्रजातियों की निगरानी करने और संधारणीय प्रथाओं को लागू करने की क्षमता सीमित हो जाती है।
- **कमज़ोर नीति और प्रवर्तन:** आवास संरक्षण, शिकार तथा संसाधन निष्कर्षण पर अपर्याप्त या खराब तरीके से लागू किए गए कानून प्रभावी संरक्षण प्रयासों में बाधा डालते हैं और अवैध गतिविधियों को पनपने देते हैं।
- **मानव-वन्यजीव संघर्ष:** मानव जनसँख्या का विस्तार और प्राकृतिक आवासों में अतिक्रमण से वन्यजीवों के साथ संघर्ष की संभावना बढ़ जाती है, जिससे लोगों तथा जानवरों दोनों को हानि हो सकती है।
- **आनुवांशिक विविधता की हानि:** कम आनुवंशिक विविधता प्रजातियों को बीमारियों के प्रति अधिक संवेदनशील बनाती है, बदलते वातावरण के लिए अनुकूलन क्षमता को कम करती है और विलुप्त होने के जोखिम को बढ़ाती है।
- **जागरूकता और शिक्षा अंतराल:** जैव विविधता के महत्व के बारे में सार्वजनिक जागरूकता और समझ की कमी संरक्षण प्रयासों एवं संधारणीय प्रथाओं के लिए समर्थन को सीमित कर सकती है।

निष्कर्ष और आगे की राह

- संरक्षित क्षेत्रों का विस्तार करें, क्षतिग्रस्त पारिस्थितिकी तंत्र को पुनर्स्थापित करें और संरक्षण प्रयासों को बढ़ाने के लिए स्वदेशी समुदायों को शामिल करें।
- सतत कृषि को बढ़ावा दें, खाद्य अपशिष्ट को कम करें और जैव विविधता पर खाद्य उत्पादन के प्रभाव को कम करने के लिए पौधे आधारित आहार को प्रोत्साहित करें।
- नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों की ओर दृष्टिकोण करें, जीवाश्म ईंधन के उपयोग को कम करें और पारिस्थितिकी तंत्र को कम से कम हानि पहुंचाना सुनिश्चित करें, जिससे जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को सीमित करने में सहायता मिले।
- पर्यावरण के लिए हानिकारक क्षेत्रों से निवेश को प्रकृति के अनुकूल, सतत गतिविधियों की ओर पुनर्निर्देशित करें, जिससे दीर्घकालिक पर्यावरणीय लाभ सुनिश्चित हों।
- WWF-India जलवायु, संरक्षण और सतत विकास नीतियों को संरेखित करने के लिए सभी क्षेत्रों में सामूहिक कार्रवाई पर बल देता है, जिसका लक्ष्य एक लचीला, संपन्न भविष्य है

Source: DTE

दैनिक मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

प्रश्न. भारत सहित वैश्विक स्तर पर वन्यजीव जनसँख्या में गिरावट से पारिस्थितिक संतुलन और जैव विविधता को किस प्रकार खतरा है, तथा विभिन्न क्षेत्रों में संरक्षण प्रयासों के लिए किन रणनीतियों पर विचार किया जाना चाहिए?

■■■■